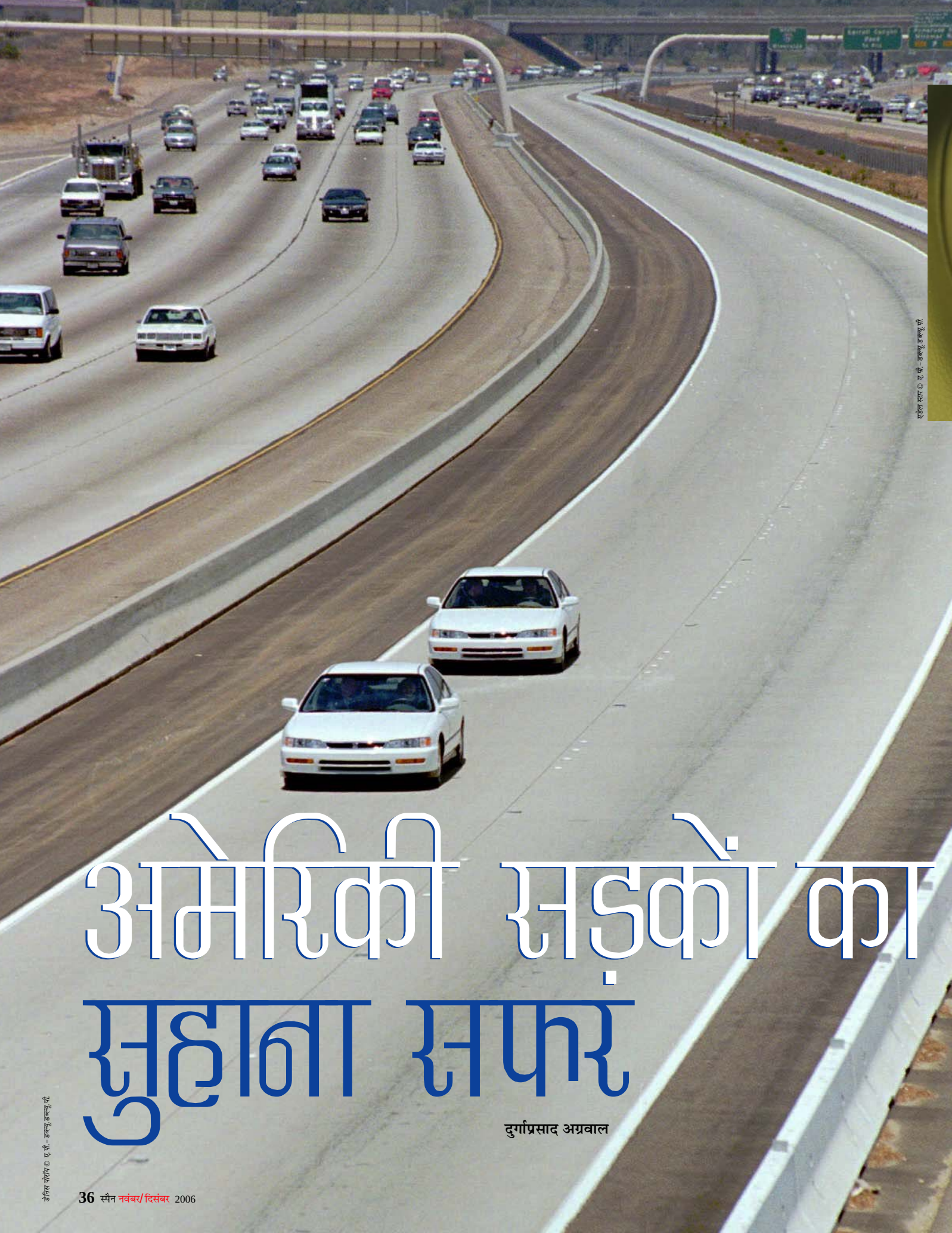

अमेरिकी सड़कों का सुहाना सफर

दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

यूनिवर्सल © ए. पी. - इस्टॅक्स्चेंज

रॉडेल स्टार © ए. पी. - इस्टॅक्स्चेंज

कीथ सालोनिक © ए. पी.– डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

भारत में पिछले कुछ वर्षों में सड़कों की दशा में काफी सुधार हुआ है, लेकिन इसी के साथ यह कहने वालों की संख्या भी कम नहीं है कि इन उम्दा सड़कों ने दुर्घटनाओं को बढ़ावा दिया है। सड़क अच्छी है इसलिए आप गाड़ी तेज चलाते हैं, इसलिए दुर्घटनाएं ज्यादा होती हैं।

जब अमेरिका आया तो यहां दोनों बातें देखकर डरा। बहुत अच्छी, साफ-सुथरी, खूब चौड़ी सड़कें, जिन पर कोई गड्ढा तो दूर, खरोंच तक ढूंढे से भी न मिले और उन पर बहुत तेज गति से भागती गाड़ियां। 100 मील (यहां माप का पैमाना मील है। 100 मील माने 160 किलोमीटर) प्रति घंटा की रफ्तार को सामान्य औसत माना जा सकता है। हाइवे पर 120-130 मील की रफ्तार भी हो सकती है और व्यस्त मार्गों पर 60-70 मील की। तो, इन दो चीजों से तो दुर्घटनाएं बहुत ज्यादा होनी चाहिए। कुछ धुकधुकी भी हुई। अपनी जान किसे प्यारी नहीं होती! लेकिन धीरे-धीरे आश्वस्ति होने लगी। ऐसा नहीं है कि यहां दुर्घटनाएं नहीं होतीं। पर अगर अनुपात में देखें तो भारत की तुलना में बहुत कम। जितनी होती हैं, उन्हें भी कम करने के लिए सतत प्रयास किए जाते हैं।

सड़कें बहुत चौड़ी और साफ-सुथरी हैं, यह मैं पहले कह चुका हूं। जहां तक संभव होता है, सड़कों पर यातायात को एक तरफा रखा जाता है यानी जाने वाली सड़क अलग, आने वाली अलग। सड़कों पर लेन सूचक अंकन बहुत स्पष्ट होता है। लेन अंकन अक्सर तो धातु की चौकोर डिब्बियों से होता है जो रात को चमकती भी हैं। कहां मुड़ना है और कहां नहीं मुड़ना है, यह भी स्पष्ट रूप से अंकित होता है। इस अंकन का उल्लंघन कोई नहीं करता। ट्रैफिक लाइट्स हमारे यहां की लाइट्स की तुलना में ज्यादा ऊंचाई पर होती हैं। सड़क के बीच में, ऊपर से नीचे को झूलती हुई। इसलिए ज्यादा दूर से दिखाई दे जाती हैं। लाल लाइट पर गाड़ी न रुके, यह हो ही नहीं सकता। फिर भी, व्यस्त मार्गों पर वीडियो कैमरे भी लगे होते हैं। उन मार्गों पर, जहां दो सड़कों के मिलने की वजह से टी बनता है, मुख्य मार्ग पर आकर मिलने वाली जगह से ठीक पहले स्टॉप का लाल चिह्न होता है, और यातायात हो या न हो, आपको रुकना ही होता है। अगर न रुके, तो निश्चय मानिए, आपको टिकट मिल जाएगा। टिकट से तत्काल तो आपकी जेब हल्की होती ही है, इसके दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं। आपको खराब ड्राइवर मानकर आपसे अधिक इंश्योरेंस प्रीमियम वसूल किया जा सकता है। ट्रैफिक पुलिसकर्मी अक्सर सड़कों के किनारे छिपे रहते है और किसी भी तरह का उल्लंघन करते ही प्रकट होकर अपनी बिजली चमकाती, सायरन बजाती गाड़ी आपके आगे ले आते हैं। आपको रोका जाता है और टिकट थमा दिया जाता है। कानून का पालन तो होना ही है। आम नागरिक जानता है कि उसने गलती की है तो सजा मिलनी ही है और इसलिये कोई जान-बूझकर गलती नहीं करता। क्या हुआ जो रात के ढाई बजे हैं और सड़क एकदम सूनी है। लाल बत्ती पर या 'स्टॉप' चिह्न पर तो रुकना ही है। क्या हुआ जो अपने गंतव्य वाले एक्जिट से बीस कदम आगे निकल गए, गाड़ी घुमा लेते हैं। नहीं। बीस मील का चक्कर पड़े तो पड़े, सही तरह से ही लौटेंगे।

सड़कों पर सारे चिह्न, सारे संकेत, सारे निर्देश बहुत स्पष्टता से और निश्चित तौर पर अंकित होते हैं। किस लेन से बाएं मुड़ना है और किस लेन से

बिल्कुल बाएं: सैन डिएगो, कैलिफोर्निया में इस हाइवे के 7.6 मील लंबे हिस्से में सेंसर लगे हैं जिससे वाहनों में मौजूद कंप्यूटरीकृत सिस्टम उनके स्टियरिंग के साथ ही गति को भी नियंत्रित कर सकता है।

ऊपर बाएं: मैक्लीन, वर्जीनिया की एक कार में लगा स्मार्ट डायल जो लेन से भटकने या किसी ऊंची बाधा आने पर पहले ही सचेत कर देता है।

ऊपर दाएं: बटलर, पेंसिल्वैनिया में सिगनल बदलने के साथ ही यातायात दौड़ने का दृश्य।

सड़कों पर यातायात हो या न हो, अमेरिका में लाल बत्ती पर वाहन चालकों को रुकना ही होता है। अगर नहीं रुके तो तय मानिए कि कि आपको दंडित करने वाला टिकट मिल जाएगा।

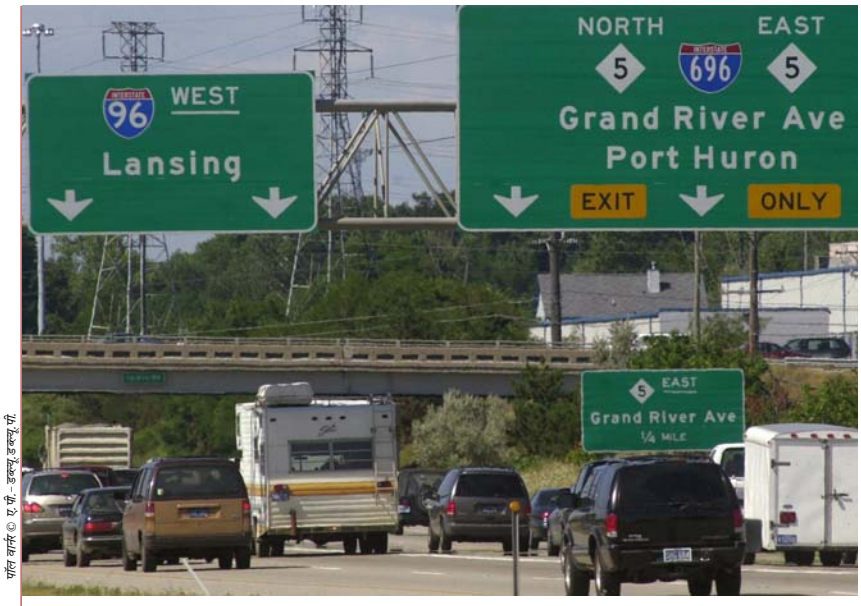

पॉल बार्न्स © पी. ई. इंक्वायरर, पी.

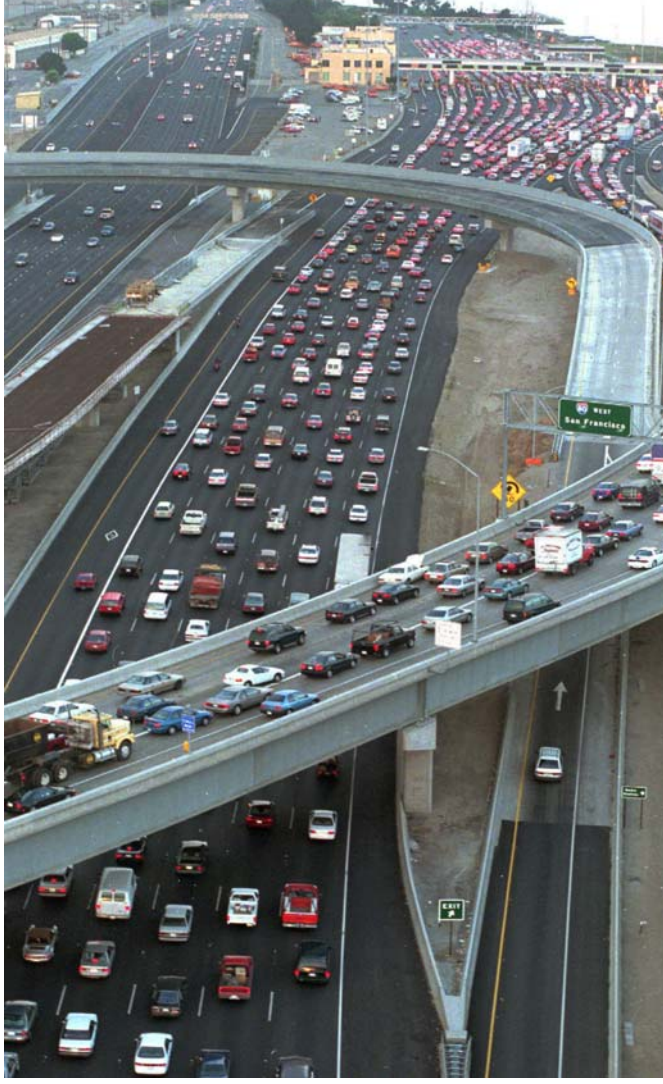

बाएं: नोवि, मिशिगन में यातायात का एक दृश्य। वाहनों के लिए संकेत बिल्कुल साफ-साफ लिखे हुए हैं।

दाएं: ओकलैंड, कैलिफोर्निया में टोल गेट के चलते यातायात थमा लेकिन फिर भी व्यवस्थित बना रहा।

नहीं मुड़ना है, किस लेन पर एक्जिट लेना है और किस लेन से एक्जिट नहीं लिया जा सकता है, कहां दाएं या बाएं नहीं मुड़ना है – यह सब साफ-साफ अंकित होता है। हर कहीं गाड़ी खड़ी कर लेने की आजादी नहीं है। बल्कि हाइवे पर तो यह तक अंकित होता है कि रुकने की अगली जगह 40 मील बाद है और हर 2-3 मील बाद विश्राम स्थल की घटी हुई शेष दूरी की सूचना अंकित होती है। हाइवे पर हर कहीं तो रुका नहीं जा सकता, इसलिए हर 40 मील के बाद रेस्ट एरिया निर्मित कर दिए गए हैं जिन तक पहुंचने के लिए हाइवे से बाहर निकलना होता है। इन विश्राम स्थलों पर पर्याप्त पार्किंग स्थल, छोटा-सा जलपान गृह, स्वच्छ शौचालय आदि होते हैं।

सभी सड़कों पर, बावजूद गाड़ियों की रेलमपेल के, दो गाड़ियों के बीच खासा फासला रहता है। यह इसलिए जरूरी है कि गाड़ियां बहुत तेज रफ्तार से चलती हैं। कोई भी वाहन चालक बगैर संकेत दिए अपनी लेन नहीं बदलता है। अगर बदल ले, जानलेवा दुर्घटना हो सकती है। वाहन चालक हॉर्न का इस्तेमाल लगभग नहीं के बराबर करते हैं। अगर किसी ने आपके लिए हॉर्न बजाया है तो यह बहुत गंभीर बात है। आपको शर्मिंदा होना चाहिए। भारत की तरह डिपर देने का चलन नहीं है। केवल मुड़ने की सूचना देने वाली लाइट्स का प्रयोग होता है।

सड़कों पर सिर्फ कारें ही दीखती हैं। भारी ट्रक वगैरह आम रास्तों पर नहीं दिखते। कभी-कभार सिटी बस जरूर दीखती है, लगभग खाली! मजा यह कि लोग उसके आगे (बाकायदा जगह बनी होती है) अपनी साइकिल तक लटका लेते हैं। सिटी बस में जो गंतव्य सूचक बोर्ड लगा होता है वह प्राय: इलेक्ट्रॉनिक होता है। जगह-जगह ऐसे स्थल भी बने होते हैं जिन्हें पार्क एंड राइड कहा जाता है। आप अपनी कार पार्क करें और बस में बैठकर चले जाएं।

सड़क पर आदमी कम ही नजर आता है। मतलब – गाड़ी के बाहर आदमी। कहीं-कहीं साइडवाक यानी फुटपाथ पर चलते युवा या सड़क के किनारे शोल्डर पर साइकिल दौड़ाते (अलग तरह का हेल्मेट लगाए) इक्का-दुक्का आदमी-औरत या साइडवाक पर ही स्केट बोर्ड पर दौड़ते किशोर ही नजर आते हैं। वाहन चालक पैदल या साइकिल सवार को विशेष अहमियत देते हैं। अगर आप पैदल हैं और सड़क पार कर रहे हैं तो ट्रैफिक को रुकना ही है। वैसे, अमेरिका में पैदल चलने वालों के लिए सड़क पार करने के निर्धारित स्थान होते हैं और उनके प्रारंभ स्थल पर एक खास तरह का बटन लगा होता है जिसे दबाने पर यातायात रोकने वाली लाल बत्ती जल उठती है। महत्वपूर्ण बात यह कि अगर कोई अचानक भी किसी विवशता से सड़क पार करे तो उसके लिये यातायात थम जाता है। दुकानों, शॉपिंग माल्स आदि से बाहर निकलकर जब आप पार्किंग स्थल तक जाते हैं तब भी आपको पैदल देख, वाहन आपको सुरक्षित सड़क पार करने देने के लिए थमे रहते हैं। यह बात यहां की संस्कृति का हिस्सा है।

गैस स्टेशन इफरात से हैं। गैस अर्थात पेट्रोल। गैस है भी सस्ती। गैस एकाधिक किस्मों में मिलती है, उनकी दरें भी अलग-अलग होती हैं। कुछ राज्यों में गैस स्टेशन पर आप खुद गैस भर सकते हैं, जबकि कुछ अन्य राज्यों में यह काम गैस स्टेशन का कर्मचारी ही करता है। गैस स्टेशनों पर पोछानुमा चीजें पड़ी रहती हैं जिन से आप खुद अपनी कार के शीशे वगैरह साफ कर सकते हैं। हर गैस स्टेशन पर एक अच्छा खासा स्टोर भी होता है जहां खाने-पीने की चीजें मिल जाती हैं। गैस स्टेशनों पर बीयर भी मिल जाती है। वहां सशुल्क और नि:शुल्क दोनों तरह के अखबार भी मिल जाते हैं।

कार में सीट बेल्ट लगाना जरूरी है। आगे बैठने वालों के लिये ही नहीं, पीछे बैठने वाले सभी लोगों के लिए भी। एक बहुत खास बात यह कि बच्चे को, चाहे वह कितना ही छोटा (एकदम नवजात भी) क्यों न हो, अलग कार सीट में ही बिठाना पड़ता है और यह कार सीट पीछे ही लगती है। जाहिर है, यह प्रावधान भावी पीढ़ी की जिंदगी की अहमियत को समझकर किया गया है। कार सीट में और वह भी पीछे होने से बच्चा ज्यादा सुरक्षित रहता है। बच्चे को सीट में बिठाना ही पर्याप्त नहीं है, उसे बेल्ट से बांधा जाना भी उतना ही जरूरी है। सीट में बिठाने वाला यह प्रावधान बच्चे के 6 वर्ष

बैंक क्रासस © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

विन मीन © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बेन मार्गेट © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

या 60 पाउंड वजन का हो जाने तक लागू रहता है।

कारों की पार्किंग की समुचित व्यवस्था होती है। पार्किंग स्थल निर्धारित होते हैं, हर गाड़ी के लिए अलग से अंकन होता है और लोग उस अंकन का ध्यान रखकर ही अपनी गाड़ी पार्क करते हैं। शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए अलग से पार्किंग का प्रावधान आम है। यह पार्किंग प्रवेश द्वार के अधिक निकट होती है। इस आरक्षित पार्किंग स्थल पर, भले ही वह खाली ही क्यों न हो, कोई अपनी गाड़ी पार्क नहीं कर सकता। गाड़ियों की बहुलता की वजह से पार्किंग की जगह का टोटा पड़ने लगा है, पर इस समस्या के समाधान भी निकाले जा रहे हैं। इस बात के प्रयास किए जाने लगे हैं लोग अपनी गाडियां शेयर करें ताकि सड़कों पर वाहन कम हों। बहुमंजिला पार्किंग आम है। व्यस्त सड़कों के किनारे मीटर आधारित पार्किंग का भी प्रावधान होता है। आप पैसे डालकर निश्चित समय के लिये अपनी गाड़ी पार्क कर सकते हैं। अन्यत्र भी, जहां स्थानाभाव होता है, सशुल्क पार्किंग का ही प्रावधान होता है। बड़े व्यापारिक संस्थान अपने ग्राहकों के लिए अलग से आरक्षित पार्किंग स्थल भी उपलब्ध कराते हैं। जगह-जगह इस आशय के बोर्ड लगे रहते हैं कि अनाधिकृत रूप से पार्क की गई गाड़ी आप ही के व्यय पर उठाकर ले जाई जाएगी। मैंने देखा कि गाड़ियों की इतनी इफरात के बाद भी पार्क करने या पार्क की हुई गाड़ी निकालने में कोई दिक्कत पेश नहीं आती, क्योंकि हर आदमी नियम और निर्देश का अक्षरश: पालन करता है।

ऐसा नहीं है कि अमेरिका में सड़क दुर्घटनाएं नहीं होती हैं। ऑटोमोबाइल एसोसिएशन ऑफ अमेरिका की एक रिपोर्ट बताती है कि सड़क पर डाल दिए गए कबाड़-कूड़े की वजह से ही साल में 25,000 दुर्घटनाएं हो जाती हैं और इनमें कम से कम 90 लोग अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। गैरजिम्मेदार लोग कहां नहीं होते? अमेरिका में भी हैं। उनकी गैरजिम्मेदारी और वाहन की तेज गति का मिश्रण घातक बन जाए तो क्या आश्चर्य? एक दिन पढ़ा कि वेब वाट्सन नाम की 55 वर्षीय महिला घर लौट रही थी कि उनकी कार के आगे जाते वाहन से सड़क पर पड़ा एक सात पाउंड वजन का धातु का टुकड़ा उछला और कार के विंडस्क्रीन को तोड़ता हुआ उनके चेहरे की सारी हड्डियां चकनाचूर कर गया। बेचारी वेब कार को ब्रेक भी नहीं लगा पाईं। कार सीधी एक खाई में जा गिरी। 14 इंच लंबा, 3 इंच चौड़ा और 1 इंच मोटा धातु का यह घातक टुकड़ा, शायद किसी ट्रक से गिर गया था। ऐसे ही एक अन्य घटनाक्रम में कुछ समय पहले वाशिंगटन विश्वविद्यालय की एक 24 वर्षीय स्नातक मारिया फेडेरिकी का मस्तिष्क व चेहरा गंभीर रूप से आहत हो गया था।

ये दो उदाहरण महज यह बताने को कि दुर्घटनाएं अमेरिका में भी होती हैं, पर इतनी तेजी से दौड़ते इतने ज्यादा वाहनों के कारण जितनी हो सकती हैं, उससे बहुत कम। महत्वपूर्ण यह बात भी है कि हर दुर्घटना को बहुत गंभीरता से लिया जाता है। अगर दो गाड़ियां थाड़ी-सी भी भिड़ जाएं तो एम्बुलेंस, पुलिस, राहत टीम सब कुछ चंद ही पलों में मौका-ए-वारदात पर हाजिर हो जाते हैं। पहला काम होता है आहत को राहत पहुंचाने का। बाकी सब उसके बाद। दुर्घटना के कारणों की गंभीर पड़ताल की जाती है, उन पर विस्तृत शोध किए जाते हैं और शोध के निष्कर्षों पर अमल किया जाता है।

ऊपर बाएं: लाल बत्ती पार करने वाले वाहन चालकों को पकड़ने के लिए मिनियापॉलिस में कैमरा।

ऊपर दाएं: सैन फ्रांसिस्को बे ब्रिज पर कारपूल लेन का इस्तेमाल करते लोग।

नीचे: सड़कों पर लाइटें इस तरह से लगी होती हैं कि दूर से ही दिख जाती हैं। व्यस्त मार्गों पर यातायात पर नजर रखने के लिए वीडियो कैमरे भी लगे होते हैं।

वीडियो कैमरों के जरिये यातायात की स्थिति पर पूरी नजर रखी जाती है ताकि स्थिति के अनुसार निर्णय लिए जा सकें। यातायात बत्तियां इस तरह से लगी होती हैं कि दूर से ही दिख जाएं।

कैनरी मैकगाल © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

***दुर्गाप्रसाद अग्रवाल** स्वतंत्र लेखक हैं और जयपुर में रहते हैं।*